# गोरखपुर : दंगा नहीं चुनावी बिसात पर साम्प्रदायिक बँटवारे का खूनी खेल

● अरविन्द

पूर्वी उत्तर प्रदेश का गोरखपुर शहर पिछले दिनों कर्फ्यू, आगजनी, तोड़फोड़ और हिंसक घटनाओं के लिए लगभग एक पखवारे तक सुर्खियों में बना रहा। ख़बरों के लिए ख़बरिया चैनलों और पूँजीवादी अखबारों पर निर्भर अधिकांश आम लोगों के मन में अभी तक शायद यही धारणा बैठी होगी कि गोरखपुर में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भीषण साम्प्रदायिक दंगा हुआ था। लेकिन ज़मीनी हक़ीकत मीडिया द्वारा गढ़ी गयी सच्चाई से बिल्कुल अलग है। गोरखपुर में दंगा नहीं हुआ। यानी, ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ कि दोनों समुदायों के आम लोग धार्मिक जुनून के वशीभूत होकर एक दूसरे को मरने-मारने पर आमादा हो गये हों। बेशक, गोरखपुर सहित पड़ोसी जिलों कुशीनगर, महाराजगंज आदि में जगह-जगह आगजनी व तोड़फोड़ हुई। गोरखपुर में दो बेगुनाहों की जानें भी गयीं, लेकिन यह सब दंगा नहीं चुनावी बिसात पर खेल गया साम्प्रदायिक बँटवारे का खूनी खेल था।

हालांकि, आज देश की पूँजीवादी चुनावी राजनीति पतनशीलता के जिस कीचड़-कुण्ड में लोट रही है उसमें जाति-धर्म के बँटवारे का यह खूनी खेल बारहमासा हो चुका है। चुनाव हो न हो किसी न किसी रूप में यह चलता ही रहता है। लेकिन जब चुनाव नज़दीक आने लगते हैं तो यह खेल एकदम खुल्लम-खुल्ला खेला जाता है। खेल की ख़ासियत यह है कि इसमें खेलने वाले दोनों पक्ष जीतते हैं और हारती है जनता। वह आम जनता जो इसमें भागीदारी करना ते दूर दर्शक बनना भी आम तौर पर पसन्द नहीं करती।

पिछले दिनों गोरखपुर इसी खेल का मैदान बना। एक ओर हिन्दुत्व के तथाकथित रक्षक थे और दूसरी ओर धर्मनिरपेक्षता के तथाकथित रखवाले। इसकी तैयारी लम्बे समय से चल रही थी। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव की तारीख नज़दीक आने के साथ ही दोनों खेमों में बेचैनियाँ बढ़ती जा रही थीं। दोनों दो-दो हाथ कर लेने को उतावले थे लेकिन सही मैदान और मुकाबले का सही समय तय नहीं हो पा रहा था। गोरखपुर में विगत 26-27 जनवरी की रात मुहर्रम की छठी के जुलूस के वक्त घटी एक दुर्घटना ने मैदान और समय दोनों मुहैय्या करा दिया। खेल चालू हो गया जो अनेक उतार-चढ़ाव के दौर से गुज़रता लगभग एक पखवारे तक चलता रहा।

26-27 जनवरी की रात घटी घटना न तो पूर्वनियोजित थी और न ही यह साम्प्रदायिक हिंसा थी। यह इत्तफ़ाकन घटी एक घटना थी। स्थानीय डी. ए. वी. कॉलेज में एक वैवाहिक समारोह में शामिल कुछ लोगों और समारोह में आयी आर्केस्ट्रा पार्टी के लोगों के बीच एक विवाद के बाद अफ़रा-तफरी मच गयी थी। इसी अफ़रा-तफरी में कुछ लोग कॉलेज से बाहर भागे। इसी समय कॉलेज के सामने मुहर्रम की छठी का जुलूस निकल रहा था। कॉलेज से भागकर आये कुछ लोग जुलूस में शामिल हो गये। इसी बीच किसी ने फायरिंग कर दी और मारपीट शुरू हो गयी। इस हंगामे के बीच राजकुमार अग्रहरी नामक एक निर्दोष युवक फँस गया। उसे काफी चोट आ गयी और अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गयी।

इसी घटना को साम्प्रदायिक रंग देकर गोरखनाथ पीठ के उत्तराधिकारी और सदर सांसद योगी आदित्यनाथ ने स्थानीय प्रशासन पर लापरवाही बरतने और प्रदेश सरकार पर मुस्लिम तुष्टीकरण करने का आरोप लगाते हुए टकराहट की मुद्रा अख़्तियार कर ली। इसी का लाजिमी नतीजा शहर में कर्फ्यू और योगी सहित कई प्रमुख स्थानीय भाजपा नेताओं और 100 से अधिक कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी के रूप में सामने आया।

योगी की गिरफ्तारी के अगले दिन से गोरखपुर शहर सहित कुशीनगर और महाराजगंज जिलों में जगह-जगह योगी समर्थकों और हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकत्ताओं के साथ ही कुछ अन्य शरारती तत्वों ने तोड़फोड़ और आगजनी करना शुरू किया जिससे साम्प्रदायिक तनाव के हालात पैदा होने की सम्भावनाएँ बन गयीं थीं। एक स्थानीय भाजपा पार्षद और उसके भाई ने बड़े ही ठंडे तरीके से एक मुस्लिम युवक की हत्या कर दी। शहर में ख़बर फैलायी गयी कि स्कोर अब एक-एक की बराबरी का हो गया है। एक अन्य बुजुर्ग मुसलमान को भी मिट्टी का तेल छिड़ककर जलाने का प्रयास किया गया। लेकिन उकसावे की इन तमाम कार्रवाइयों और तरह-तरह की अफवाहों के बावजूद आम लोग साम्प्रदायिक जुनून का शिकार नहीं हुए और न ही हालात कभी भी बेकाबू ही हुए। इसका एक कारण शायद यह था कि आम लोग इस चुनावी खेल को समझ रहे थे और दूसरा शायद यह कि महंगाई की मार और अमीरी ग़रीबी के बीच बढ़ते सामाजिक ध्रुवीकरण ने दोनों धार्मिक समुदायों के मेहनतकशों की वर्गीय एकजुटता की भावना को अन्दर ही अन्दर मजबूत बनाया है।

योगी और अन्य भाजपा नेताओं की गिरफ्तारी और तक़रीबन दस दिन बाद रिहाई के समूचे घटनाक्रम के दौरान साम्प्रदायिक आधार पर वोटों के बँटवारे को ठोस बना लेने की नीयत से बयानबाजियाँ होती रहीं। योगी की रिहाई के लिए प्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्रमुख भाजपा नेताओं के कूच करने और उनकी गिरफ्तारी का नाटक भी खूब चला। भाजपा नेताओं ने मुलायम सिंह यादव पर मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति करने और हिन्दुओं के सम्मान और गरिमा को आघात पहुँचाने का आरोप लगाया। वहीं दूसरी ओर मुलायम सिंह यादव साम्प्रदायिक शक्तियों को कुचलने और उनके मंसूबों को नाकाम करने का बयान लगातार देते रहे

जिससे प्रदेश भर के मुसलमानों के बीच यह सन्देश जाये कि एकमात्र वे ही मुसलमानों की रक्षा कर सकते हैं। बयानबाजियों का यह सिलसिला चुनावों की तिथियाँ नज़दीक आते जाने के साथ ही और तेज़ होता जा रहा है।

एक तरफ हिन्दुत्ववादी साम्प्रदायिक फासीवादी शक्तियाँ और दूसरी ओर चुनावबाज धर्मनिरपेक्षता के अलमबरदार– दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। 'क्रिया-प्रतिक्रिया' का यही ख़तरनाक खेल जब आगे बढ़ता है तो किसी भी समय भीषण दंगें के रूप में बदल जाता है। वैसे भी 'बाँटों और राज करो' हुकूमती जमातों का पुराना खेल है। आज 'जाति-धर्म', के आधार पर साम्प्रदायिक बँटवारे के इस खेल में किसी न किसी रूप में सभी चुनावबाज पार्टियां शामिल हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आक्रामक हिन्दुत्ववादी साम्प्रदायिक राजनीति का पिछले एक दशक में काफ़ी फैलाव हुआ है। उनकी हिन्दू युवा वाहिनी के बैनर तले गाँवों-कस्बों तक निम्न मध्य वर्ग बेरोजगार, युवा संगठित हो रहे हैं। उनके जीवन की हताशा-निराशा सही दिशा न मिलने के कारण उन्हें इस साम्प्रदायिक राजनीति की चपेट में ले रही हैं। एक ओर जहाँ यह भारतीय पूँजीवाद के संकट की देन है जो अब गरीब-निम्नमध्यवर्ग के युवाओं को भविष्य की नाउम्मीदी के सिवा और कुछ नहीं दे सकती तो दूसरी ओर यह क्रान्तिकारी शक्तियों की कमज़ोरी की भी देन है जिससे युवाओं को भविष्य का सही रास्ता नहीं दिख रहा है। योगी की गिरफ्तारी के बाद की हिंसक घटनाओं में हिन्दू युवा वाहिनी के इन्हीं कार्यकर्त्ताओं की ही सक्रियता अधिक नज़र आयी। आम हिन्दू धार्मिक भावनाओं के कारण योगी के प्रति सहानुभूति भले रख रहा हो सड़क की कार्रवाई से वह दूर ही रहा।

पूँजीवाद के मौजूदा संकट से करोड़ों करोड़ नौजवानों का भविष्य जिस तरह अँधेरी चक्करदार गलियों में भटक रहा है वह फासीवादी ताकतों के फलने-फूलने के लिए अनुकूल खाद-पानी मुहैय्या करा रहा है। गोर्की ने एक जगह लिखा है कि निम्न मध्यवर्ग के निराश और पीले-बीमार चेहरे वाले नौजवान फासिस्टों की फौज के सिपाही बनते हैं। यही नौजवान आज हमारे देश में एक नये क्रान्तिकारी परिवर्तन की विराट ऊर्जा से भी सम्पन्न हैं। लेकिन इस ऊर्जा को इस दिशा में सक्रिय करने के लिए युवा आबादी के बीच क्रान्तिकारी विचारों के निरन्तर प्रचार और उन बुनियादी मुद्दों को उभारने के लिए संघर्ष-आन्दोलन की विविध कार्रवाइयों की जरूरत होगी जिन्हें साम्प्रदायिक फासीवादी ताकतें ही नहीं सभी पूँजीवादी राजनीतिक पार्टियाँ भी दबाती रहती हैं। ये मुद्दे हैं देशी-विदेशी पूँजी की लूट के मुद्दे, महँगाई, बेरोज़गारी, आम जनता के उत्पीड़न और जनतांत्रिक अधिकारों के मुद्दे आदि। शहीदे आज़म भगत सिंह ने भी कहा था **''लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की ज़रूरत है। गरीब मेहनतकशों और किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूँजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकण्डों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़कर कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी ग़रीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म, या राष्ट्र के हों अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग नस्ल और राष्ट्रीयता के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथों में लेने का प्रयत्न करो।''**

साम्प्रदायिक फासीवाद का मुकाबला करने में नौजवानों को भगत सिंह की इस विरासत को हमेशा अचूक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। इसके साथ ही नौजवानों को सच्ची धर्मनिरपेक्षता से भी परिचित कराया जाना चाहिए। सच्ची धर्मनिरपेक्षता सर्वधर्मसमभाव कदापि नहीं हो सकती। सच्ची धर्मनिरपेक्षता है राज्य के कामों से धर्म का पूरी तरह से अलगाव और केवल व्यक्तिगत आस्था के रूप में ही धर्म का बने रहना। हमारे देश में सर्वधर्मसमभाव पर आधारित नेहरूवादी धर्मनिरपेक्षता का ही डंका बजाया जाता है। नकली वामपन्थी पार्टियाँ भी इसी का गुन गाती हैं जबकि देश में साम्प्रदायिक फासीवादी राजनीति के फलने-फूलने में इस तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की भी अहम भूमिका रही है।

विगत बीसवीं सदी के इतिहास ने सिद्धकर दिया है कि कोई भी पूँजीवादी निजाम आज सेक्युलर हो ही नहीं सकता। अपनी लूट की हिफ़ाज़त के लिए सरमायेदारों को भी न केवल धर्म के आधार पर जनता को बाँटना है, बल्कि उसे अन्धविश्वास, रहस्यवाद और भाग्यवाद की अँधेरी खोह में फँसाये रखना भी जरूरी है। इतिहास गवाह है कि सच्चा धर्मनिरपेक्ष समाज आज केवल मेहनतकश जनता का राज--सच्चा समाजवाद ही दे सकता है। परिवर्तनकामी नौजवानों को यह बात अच्छी तरह समझनी होगी कि साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान नेहरूवादी धर्मनिरपेक्षता या सर्वधर्मसमभाव के नारे में नही बल्कि एक ऐसे सामाजिक राजनीतिक ढाँचे में है जिसमें धर्म लोगों का व्यक्तिगत विश्वासमात्र हो, जिसमें वैज्ञानिक जीवन दृष्टि समाज की मार्गदर्शक शक्ति हो और जहाँ शिक्षा, संचार माध्यमों और राजनीति सहित सार्वजनिक जीवन के किसी भी क्षेत्र में धर्म का लेशमात्र भी दखल न हो। यह नया भारत एक समाजवादी भारत होगा जो मेहनतकश जनता के इंक़लाबी संघर्षों के साँचे में ढलकर तैयार होगा।

शहीदे आज़म भगत सिंह और उनके साथियों ने भी आज से 75 साल पहले यही कहा था। उनसे भी पहले गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों ने बार-बार ज़ोर देकर कहा था कि राजनीति और सामाजिक जीवन से धर्म को बिल्कुल अलग रखा जाना चाहिएं। अपनी इस विरासत को मजबूती से थामकर ही हम साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ा सकते हैं।

## पाठक मंच

(पेज 2 से जारी)

दिख रहे हैं दूर से
नीतियों से लाखों को श्मशान कर।
यह प्रणाली लाभ की पूँजी की धुर पर जब तक चलेगी,
प्रात में बचपन, दोपहरी में जवानी भी लुटेगी।
साँझ को लूटेगी जीवन, अंधकारों में तुम्हारी पीढ़ियों को लूट लेगी।
एक जीवन के लिए इस नर्क से जीवन की ख़ातिर
पीढ़ियाँ तुमको क्या कहेंगी ऐ स्वार्थी नर
स्वार्थ को त्यागो, मोह से जागो, शोषित ज़िन्दगी के
मुक्तिकामी मुक्त गगन में ज़रा उड़कर देखो ले सके हर व्यक्ति अपना अंश, शोषण दंश से बच
आज तेरा ओज, तेरी बुद्धि, तेरी प्राण-ज्वाला क्रान्ति की आँधी, तिरस्कृति आज तेरी मुक्त काया
मुक्त हर किलकारियों के लिए तुमको माँगता हूँ।

**प्रेमप्रकाश, दिल्ली**